अध्याय

01

यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

सीखने के प्रतिफल

दुनिया में महत्वपूर्ण क्रांतियां जैसे — फ्रांस की क्रांति,1830 — 1848 की क्रांति की तुलना करता है।

विभिन्न क्रांतियों के कारण और प्रभाव की व्याख्या कर सकता है।

क्रांति और सामाजिक परिवर्तन के बीच अंतर को स्पष्ट कर सकता है।

परिचय

सामान्यतः राष्ट्रवाद को राष्ट्रप्रेम या राष्ट्रभक्ति के रूप में समझा जा सकता है। दुनिया में सर्वप्रथम राष्ट्रवाद का उदय यूरोप में हुआ। अगर हम 18 वीं सदी के यूरोप के नक्शे को देखें तो वे आज के यूरोपीय राष्ट्रों के तरह नहीं थे। संपूर्ण यूरोप अनेक छोटे-बड़े स्वायत क्षेत्रों में बटा हुआ था। यूरोप में राष्ट्रीयता की भावना के विकास में फ्रांस की राज्यक्रांति—1789 एवं नेपोलियन के आक्रमणों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

© JCERT not to be republished

राष्ट्रवाद — राष्ट्रवाद एक विचारधारा है जो किसी भी राष्ट्र के सभी नागरिकों में एक साझा पहचान कायम करती है उसे राष्ट्रवाद कहते हैं। राष्ट्रवाद की विचारधारा को मजबूत करने के लिए कई प्रतीकों का सहारा लिया जाता है। जैसे— राष्ट्रीय ध्वज,राष्ट्रीय प्रतीक, राष्ट्रगान, राष्ट्रीय नायक इत्यादि।

1 फ्रांसीसी क्रांति और राष्ट्र का विचार

विश्व में राष्ट्रवाद की पहली अभिव्यक्ति 1789 में फ्रांसीसी क्रांति के साथ हुई। फ्रांस निरंकुश राजतंत्र के अधीन था। फ्रांस पर लुई 14, लुई16 जैसे निरंकुश शासकों ने शासन किया। क्रांति से पूर्व फ्रांस का समाज तीन वर्गों में बांटा था, जिसमें विशेषाधिकारों को लेकर घोर असंतोष व्याप्त था। इसके अतिरिक्त फ्रांसीसी शासकों द्वारा निरंतर युद्ध में उलझे रहने के कारण फ्रांस की अर्थव्यवस्था भी चौपट हो गई थी। ऐसी परिस्थिति में राजतंत्र के खिलाफ विद्रोह शुरू हो गया।

राजनीतिक कारण
- निरंकुश राजतंत्र
- वंशानुगत नौकरशाही
- भ्रष्ट और दमनकारी नौकरशाही
- अव्यवस्थित और जटिल कानून

निरंकुशवाद (Absolutism): ऐसी सरकार या शासन व्यवस्था जिसकी सत्ता पर किसी प्रकार का कोई अंकुश नहीं होता। इतिहास में ऐसी राजशाही सरकारों को निरंकुश सरकार कहा जाता है जो अत्यंत केंद्रीकृत, सैनय बल पर आधारित और दमनकारी सरकारें होती थीं।

कल्पनादर्श (युटोपिया) एक ऐसे समाज की कल्पना जो इनता आदर्श है कि उकसा साकार होना लगभग असंभव होता है।

सामाजिक कारण
- विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग
  - प्रथम एस्टेट
    - पादरी
  - द्वितीय एस्टेट
    - सामंत और कुलीन
- विशेषाधिकार से वंचित वर्ग
  - तृतीय एस्टेट
  - जनसाधारण वर्ग-किसान, मजदूर , शिल्पी ,व्यापारी, शिक्षित मध्यम वर्ग

आर्थिक कारण
- राजाओं की फिजूलखर्ची
- वंशानुगत नौकरशाही
- सप्त वर्षीय युद्ध (लुई 15)
- अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेना(लुई16)

फ्रांसीसी क्रांति के बाद फ्रांस में आए बदलाव

फ्रांस में होने वाली गतिविधियों से यूरोप के अधिकांश देश प्रभावित हुए। यूरोपीय देशों में शिक्षित मध्यम वर्ग के लोगों और विद्यार्थियों ने **जैकोबिन क्लब** की स्थापना की। इन क्लबों की गतिविधियों के कारण यूरोपीय देशों में फ्रांसीसी सेना के आगमन का रास्ता साफ हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि 1790 के दशक में फ्रांस की सेना हॉलैंड, बेल्जियम, स्वीटजरलैंड और इटली के एक बड़े हिस्से में प्रवेश कर गई। इस तरह यूरोपीय देशों में फ्रांसीसी सेना ने राष्ट्रवाद का प्रचार-प्रसार किया।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

नेपोलियन

नेपोलियन 1799 में फ्रांस का प्रथम कॉन्सल बना और 1804 ई० तक इस पद पर रह। 1804ई० से 1815ई० तक को फ्रांस का सम्राट बना रहा। उसने फ्रांस में प्रजातंत्र को समाप्त कर फिर से वहां राजतंत्र की स्थापना की। 1815 में मित्र राष्ट्र ब्रिटेन ,रूस ,प्रशा और ऑस्ट्रिया की मिली जुली सेना ने **"वाटरलू के युद्ध"** में नेपोलियन को पराजित किया और उसे सेंट हेलेना द्वीप में निर्वासित कर दिया गया ,जहां 1821 ईसवी में 52 वर्ष की उम्र में उसकी मृत्यु हो गई।

फ्रांसीसी क्रांति के बाद फ्रांस में आए बदलाव

- राजतंत्र को समाप्त कर लोकतंत्र स्थापित किया गया।
- पितृ पक्ष और नागरिक जैसे विचारों ने एक संयुक्त समुदाय के विचार पर बल दिया।
- राजसी प्रतीक के स्थान पर नया फ्रांसीसी झंडा प्रयोग में लाया गया।
- एस्टेट जनरल का नाम बदलकर **नेशनल असेंबली** कर दिया गया।
- संपूर्ण फ्रांस में एक जैसे कानून वाली केंद्रीय प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की गई।
- भार तथा मापन की एक नई मानक प्रणाली अपनाई गई।
- आंतरिक आयात-निर्यात शुल्क को समाप्त कर दिया गया।
- क्षेत्रीय भाषाओं को हतोत्साहित कर **फ्रेंच** भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित किया गया।

नेपोलियन के सुधार

- स्टेटस जनरल का नाम बदलकर नेशनल एसेंबली कर दिया गया।
- नया फ्रांसीसी ध्वज तिरंगा प्रयोग में लाया गया
- 1804 ईस्वी में नागरिक संहिता लागू किया गया जिसे **"नेपोलियन कोड"** के नाम से जाना गया।
- 1808ई०में पेरिस में इंपीरियल विश्वविद्यालय स्थापित किया
- एक समान आर्थिक नीति को लागू किया गया।
- फ्रेंच भाषा को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया गया।

2. **यूरोप में राष्ट्रवाद का निर्माण**

- 18 वीं शताब्दी के मध्य का यूरोप अनेक छोटे-बड़े राजशहियों, कैंटनों और स्वायत्त क्षेत्रों में बटा हुआ था।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

नेपोलियन कोड(संहिता)

- जन्म पर आधारित विशेष अधिकारों की समाप्ति
- कानून के समक्ष बराबरी
- संपत्ति का अधिकार सुरक्षित
- फ्रांस के सारे उपनिवेशन पर लागू
- सामंती व्यवस्था की समाप्ति
- किसानों को भू दासत्व और जागीरदारी शुल्क से मुक्ति
- कारीगरों पर श्रेणी नियंत्रण समाप्त

- इनकी अपनी सामूहिक पहचान एक समान संस्कृति नहीं था।
- क्षेत्र विशेष के लोग अलग-अलग भाषाएं बोलते थे।
- इनमें राष्ट्रीयता की कोई भावना नहीं थी इन सबों को एक सूत्र में बांधने वाला तत्व केवल सम्राट के प्रति निष्ठा थी।

2.1 कुलीन वर्ग और नया मध्यवर्ग

- संख्या में कम होने के बावजूद यह यूरोप का सबसे प्रभावशाली वर्ग था।
- इस वर्ग के पास भू स्वामित्व था।
- इनकी साझी जीवनशैली थी।
- यह वर्ग आपस में वैवाहिक संबंधों से बंधे होते थे।
- इनकी संख्या कम थी।

पश्चिमी और मध्य यूरोप के अनेक भागों में औद्योगिक उत्पादन और व्यापार में विकास के साथ हीं एक नए मध्यम वर्ग का उदय हुआ। इंग्लैंड में औद्योगिकरण 1750 के आसपास हुआ , लेकिन फ्रांस और जर्मनी में 19वीं शताब्दी में हुआ। औद्योगिकरण की इस प्रक्रिया में एक नए वर्ग श्रमिक वर्ग का उदय हुआ। मध्यम वर्ग में पूंजीपतियों ,व्यापारियों और सेवा क्षेत्र के लोग थे। विशेष अधिकारों की समाप्ति के बाद राष्ट्रीय एकता के विचार लोकप्रिय हुए।

2.2 उदारवादी राष्ट्रवाद के क्या मायने थे?

उदारवाद शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के LIBER से हुई है, जिसका अर्थ होता है — आजाद

नए मध्यवर्ग के लिए उदारवाद का मतलब था — व्यक्ति के लिए आजादी और कानून के समक्ष बराबरी।

राजनीतिक रूप से

- उदारवाद एक ऐसी सरकार पर जोर देता था जो सहमति से बनी हो।
- निरंकुश शासक और पादरी वर्ग के विशेषाधिकार का विरोधी हो।
- संविधान और संसदीय प्रतिनिधि सरकार का पक्षधर हो।
- निजी स्वामित्व की अनिवार्यता पर बल देता हो।

© JCERT not to be republished

आर्थिक क्षेत्र में

- बाजारों से मुक्ति
- वस्तुओं तथा पूंजी के आवागमन पर राज्य द्वारा लगाए गए सीमाशुल्क की समाप्ति
- एकीकृत आर्थिक क्षेत्र के निर्माण पर बल
- राष्ट्रीय एकीकरण का समर्थन

नारीवादः स्त्री–पुरुष की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक समानता की सोच के आधार पर महिलाओं के अधिकारों और हितों का बोध।

रूढ़िवादः ऐसा राजनीतिक दर्शन जो परंपार, स्थापित संस्थानों और रिवाजों पर जोर देता है तेज बदलावों की बजाय क्रमिक और धीरे–धीरे विकास को प्राथमिकता देता है।

2.3 1815 के बाद यूरोप

1815 ई० में नेपोलियन के पतन के बाद यूरोपीय शक्तियों का सम्मेलन वियना में हुआ, इसे "**वियना समझौता**" के नाम से जाना जाता है इस सम्मेलन की अध्यक्षता ऑस्ट्रिया के चांसलर मेटरनिख ने किया था। जिसका

1830 का यूरोप

- तीव्र जनसंख्या विस्फोट (जनसंख्या में तेजी से वृद्धि)
- ग्रामीण जनसंख्या का शहरों की ओर पलायन
- बेरोजगारी में वृद्धि
- गरीबी में वृद्धि

1830 ई० की क्रांति

- 1815 ई० में स्थापित बूबों वंश के शासन की समाप्ति
- लुई फिलिप के नेतृत्व में संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना
- ब्रुसेल्स, यूनाइटेड किंगडम ऑफ द नीदरलैंड से अलग हो गया
- 1821 ई० में यूनान की आजादी का संघर्ष प्रारंभ
- 1832 ई० में यूनान स्वतंत्र राष्ट्र घोषित

1848 ई० की क्रांति

- फ्रांस में द्वितीय गणतंत्र की स्थापना
- ऑस्ट्रिया में मेटरनिख शासन की समाप्ति
- यूरोपीय राष्ट्रों में सुधारवादी आंदोलन
- प्रेस की स्वतंत्रता
- संगठन बनाने की स्वतंत्रता

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

उद्देश्य फ्रांस को पंगु बना देना था। अब यूरोप में राष्ट्रवादी शासन व्यवस्था स्थापित हुई। वे निरंकुश थी।। इस निरंकुश व्यवस्था के विरुद्ध 1830 ईस्वी में यूरोप में क्रांतियां शुरू हो गई।

3.क्रांतियों का युग 1830—1848

सबसे पहले जुलाई 1830 में फ्रांस में विद्रोह हुआ क्रमशः 1848 ई में भी विद्रोह हुआ। जिसका नेतृत्व उदार वादियों ने किया था। दोनों ही क्रांतियों ने फ्रांस और संपूर्ण यूरोप को प्रभावित किया।

4 जर्मनी और इटली का निर्माण—

1848 ई० के बाद यूरोप में राष्ट्रवाद का जनतंत्र और क्रांति से अलग होने लगा। अब रूढ़िवादियों ने राष्ट्रवादी भावनाओं का इस्तेमाल राज्य की सत्ता को बढ़ाने और संपूर्ण यूरोप पर राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने के लिए किया। परिणाम स्वरूप जर्मनी और इटली एकीकृत होकर राष्ट्र राज्य बने।

'रक्त एवं लौह की नीति'

इस नीति का अर्थ था एकीकरण के मार्ग में आने वाले सभी विरोधी शक्तियों तथा नीतियों के प्रति कठोर और सख्त रवैया अपनाना। बिस्मार्क ने इस नीति की घोषणा 1862 में किया।

4.1 जर्मनी का एकीकरण–

1848 में जर्मन महासंघ के विभिन्न इलाकों को जोड़कर एक निर्वाचित संसद द्वारा शासित राष्ट्र बनाने का प्रयास किया गया। लेकिन राजशाही और उसके सैन्य ताकत ने इस प्रयास को विफल कर दिया। 1832 ई० में **बिस्मार्क** ऑस्ट्रिया का चांसलर बना और अपनी कूटनीति, सूझ-बूझ तथा **"रक्त एवं लौह"** की नीति के द्वारा जर्मनी का एकीकरण पूर्ण किया। **18 जनवरी 1871** को वर्साय के महल में प्रशा के राजा काइजर विलियम प्रथम को जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया। इसके साथ ही एक राष्ट्र के रूप में जर्मनी का निर्माण हुआ।

बिस्मार्क — जर्मनी के एकीकरण के नायकों में से एक महत्वपूर्ण निर्णायक था। वह विख्यात राष्ट्रवादी और कूटनीतिज्ञ था। उसने फ्रैंकफर्ट संसद में भाग लिया था। रूस और फ्रांस में राजदूत भी रहे। 1862 ई० में प्रशा का चांसलर बना। बिस्मार्क ने सर्वप्रथम प्रशा की आर्थिक और सैनिक सशक्तिकरण के लिए काम किया। तत्पश्चात् 1864 में डेनमार्क, 1866 में सेडोवा का युद्ध (ऑस्ट्रिया) तथा 1870 में सेडान का युद्ध (फ्रांस)को पराजित कर जर्मनी का एकीकरण सुनिश्चित किया।

4.2 इटली का एकीकरण–

एक राष्ट्र के रूप में उदय के पूर्व इटली सात छोटे बड़े राज्यों में विभाजित था। **मेजिनी, काबूर** और **गैरीबाल्डी** के निरंतर प्रयासों से इटली का एकीकरण संभव हुआ। 1870-71 के फ्रांस के साथ निर्णायक युद्ध में विजयी होने के बाद विक्टर एमैन्युएल द्वितीय को एकीकृत इटली का शासक बनाया गया।

इटली का एकीकरण

- मेजिनी
- काउंट कावूर
- गैरीबाल्डी

© JCERT not to be republished

मेजिनी

- गुप्त दल कार्बोनरी का सदस्य
- 1830 के दशक में एकीकृत इटली का विचार प्रस्तुत किया
- 1831 में **"यंग इटली"** की स्थापना की

काउंट कावूर

- इटली के एकीकरण का राजनीतिज्ञ
- 1850 में सर्डिनिया के शासक विक्टर एमैनुएल द्वितीय का मंत्री बना
- 1852 में प्रधानमंत्री नियुक्त
- 1856 के पेरिस सम्मेलन में इटली की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का चित्र प्रस्तुत किया

गैरीबाल्डी

- **"लाल कुर्ती"** दल का संगठन
- 1860 में दक्षिणी इटली और सिसली पर अधिकार
- 1871 में विक्टर एमैनुएल द्वितीय को एकीकृत इटली का शासक घोषित किया

© JCERT not to be republished

5 राष्ट्र की दृश्य कल्पना

18वीं और 19वीं शताब्दी के कलाकारों ने राष्ट्र को मानव के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। दूसरे शब्दों में उन्होंने एक देश को ऐसे चित्रित किया जैसे वह कोई व्यक्ति हो।

> 19 वीं सदी में राष्ट्रों की वेशभूषा — नारी भेष में स्वतंत्रता का प्रतीक — लाल टोपी या टूटी हुई जंजीर फ्रांस में इंसाफ का प्रतीक — आंख में बंधी पट्टी और हाथ में तराजू लिए हिलाजर्मन राष्ट्र का रूपक चित्र — जर्मनिया जर्मन बलूच प्रतीक है — वीरता का जर्मेनिया मुकुट पहनती है— बलूच वृक्ष के पत्तों का

ज्युसेपे गैरीबॉल्डी (1807-82) संभवतः इटली के स्वतंत्रता सेनानियों में सबसे मशहूर है। उसका संबंध एक ऐसे परिवार से था जो तटीय व्यापार में संलग्न था और वह स्वयं व्यापारिक नौसेना में एक नाविक था। 1833 में उसकी मुलाकात मेत्सिनी से हुई, वह 'यंग इटली' आंदोलन से जुड़ा और 1934 में पीडमॉण्ट के गणतंत्रीय विद्रोह में उसने भाग लिया। यह विद्रोह कुचल दिया गया और गैरीबॉडी को दक्षिण अमेरिका भागना पड़ा जहाँ वह 1848 तक निर्वासन में रहा। 1854 में उसने विक्टर इमेनुएल II का समर्थन किया जो इतालवी राज्यों को एकीकृत करने का प्रयास कर रहा था। 1860 में गौरीबॉल्डी ने दक्षिण इटली की तरफ एक्सपिडिशन ऑफ द थाउजेंड (हजार लोगों का अभियान) का नेतृत्व किया। इस अभियान में नए स्वयंसेवक जुड़ते चले गए और उनकी संख्या लगभग 30,000 तक पहुँच गई। वे 'रेड शर्ट्स' के नाम से लोकप्रिय हुए।

1867 में गौरीबॉल्डी के नेतृत्व में सवयंसेवकों की एक सेना पेपल राज्यों से लड़ने रोम गई

महत्वपूर्ण प्रतीक अर्थ

1. टूटी हुई बेड़िया — स्वतंत्रता
2. बाज छाप कवच — जर्मन साम्राज्य की शक्ति का प्रतीक
3. तलवार — मुकाबले कीतैयारी
4. तलवार पर लिपटी
   जैतून की डाली — शांति की प्रतीक
5. उगते सूर्य की किरणें — नए युग का शुभारंभ

जो इटली के एकीकरण में अंतिम बाधा थी। वहाँ एक फ्रांसीसी सैनिक के सामने टिक नहीं पाए। 1870 में जब प्रशा से युद्ध के दौरान फ्रांस ने रोम से अपने सैनिक हटा लिए तब जाकर पेपल राज्य अंततः इटली मं सम्मिलित हुए।

6 **राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद–**

19वीं शताब्दी के अंतिम दौर में राष्ट्रवाद सीमित लक्ष्य वाला संकीर्ण सिद्धांत बन गया। प्रमुख यूरोपीय शक्तियां भी राष्ट्रवाद का प्रयोग अपने साम्राज्यवादी हितों को साधने के लिए करने लगे। 1871 के बाद यूरोप के बाल्कन क्षेत्र में गंभीर राष्ट्रवादी तनाव उत्पन्न हो गय। इसमें विश्व की कई महत्वपूर्ण शक्तियां शामिल हो गई। जिसके परिणाम प्रथम विश्व युद्ध के रूप में सामने आए।

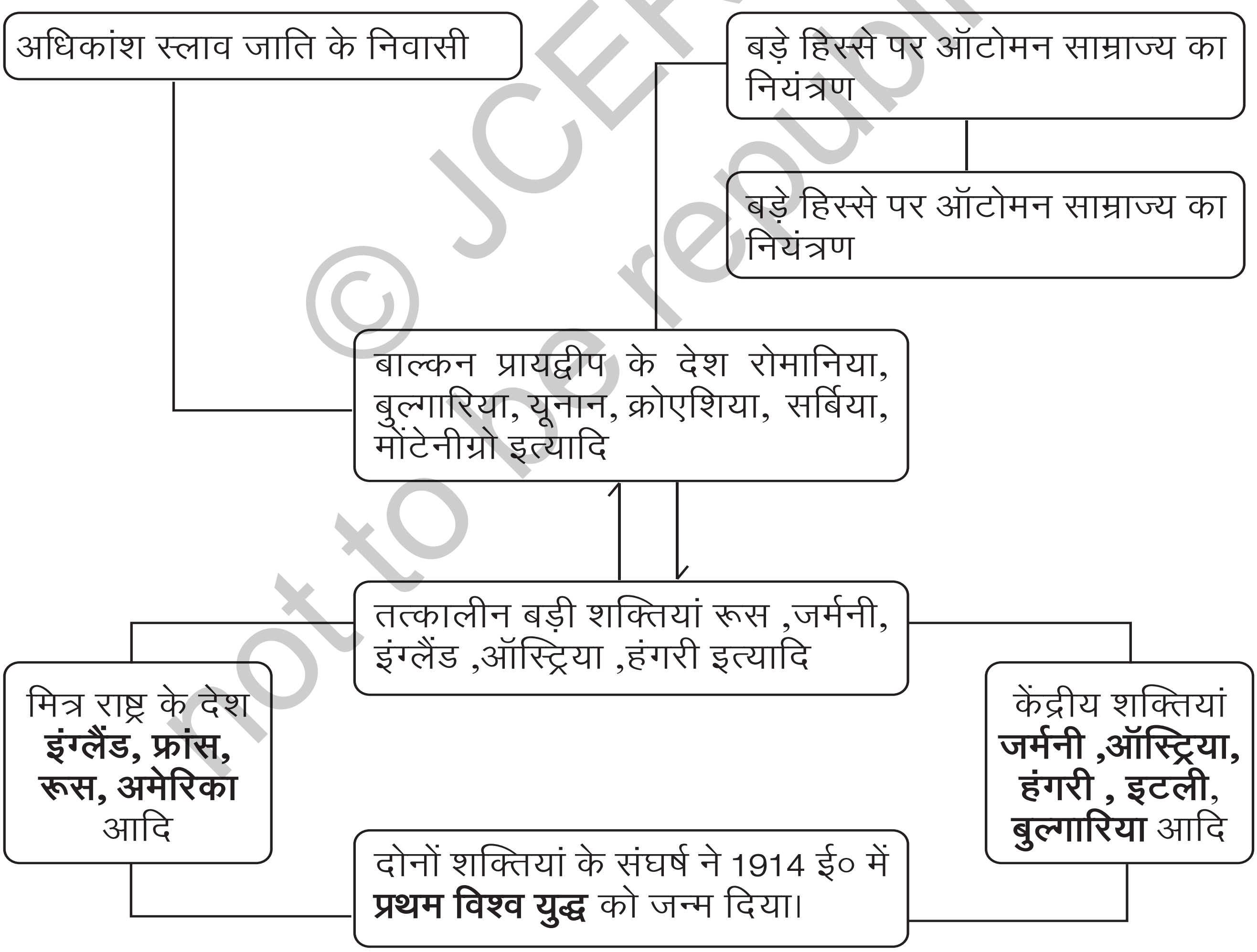

© JCERT not to be republished

स्मरणीय तथ्य

- विश्व में सर्वप्रथम राष्ट्रवाद की उत्पत्ति फ्रांस में हुई।
- फ्रांसीसी क्रांति का नारा- स्वतंत्रता ,समानता और बंधुत्व।
- नेपोलियन ने 39 राज्यों का जर्मन महासंघ स्थापित किया।
- मेटरनिख, ऑस्ट्रिया का चांसलर था।
- मेटरनिख ने इटली के क्रांतिकारी जोसेफ मैजिनी को 'अपनी सामाजिक व्यवस्था का सबसे खतरनाक दुश्मन' बताया।
- "मैं ही राज्य हूं"- लुई 14वां।
- फ्रांस की क्रांति के समय वहां का शासक - लुई 16वां।
- फ्रांस में 21 वर्ष से ऊपर सभी व्यस्क पुरुषों को मताधिकार की प्राप्ति -1848 की क्रांति के बाद।

© JCERT not to be republished

सारांश

यूरोप में राष्ट्रवाद का क्रमिक विकास

- **फ्रांसीसी क्राति—1789**
- **नेपोलियन कोड—1804**
- **वियना सम्मेलन—1815**
- **उदारवादियों की क्रांति—1830**
- **उदार वादियों की क्रांति—1848**
- **जर्मनी का एकीकरण—1866-71**
- **इटली का एकीकरण—1870-71**

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न-उत्तर

संक्षेप में लिखें

1. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए

(क) जोसेफ मेजिनी

(ख) काउंट कैमिलो दे कावूर

(ग) यूनानी स्वतंत्रता युद्ध

(घ) फ्रैंकफर्ट संसद

(ङ) राष्ट्रवादी संघर्षों में महिलाओं की भूमिका

उत्तर:

(क) जोसेफ मेजिनी— इटली का एक महान क्रांतिकारी जिसने 'यंग इटली' नामक आंदोलन चलाया और जिसके फलस्वरूप इटली में एकीकरण की

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

भावना को बल मिला। इटली के इस क्रांतिकारी का जन्म 1807 ई०में जेनेवा में हुआ था। उसने 1848 ई० में रोम पहुंचकर वहाँ के पोप से नेपल्स राज्य को स्वतंत्र कराया। उसके इस कार्य से पूरे यूरोप के सभी राज्यों को धर्म के प्रभुत्व से स्वतंत्र होने के लिए प्रोत्साहन मिला।

(ख) काउंट कैमिलो दे कावूर—इटली के एकीकरण का वास्तविक श्रेय कावूर को ही जाता है। कावूर को इटली का बिस्मार्क माना जाता है। 1852 ई०में वह सार्डिनिया का प्रधानमंत्री बना तथा इटली के एकीकरण के कार्य में जुड़ गया। उसने अपनी कूटनीतिक चालों द्वारा इस कार्य को पूर्ण किया। उसने कई युद्धों में भाग लेकर इटली के राज्यों को सार्डिनिया के साथ मिलने का अवसर प्रदान किया। उसने 1860 ई० में दक्षिणी इटली और दो सिललियों को जीतने में जोसेफ गैरीबाल्डी का साथ लिया। उसकी मृत्यु के समय रोम और वेनेशिया के राज्यों को छोड़कर इटली के एकीकरण का काम पूर्ण हो चुका था।

(ग) यूनानी स्वतंत्रता युद्ध — एक ऐसी घटना जिसने पूरे यूरोप के समाज में राष्ट्रीय भावना उत्पन्न की, वह यूनानी स्वतंत्रता युद्ध के नाम से जानी जाती है। इस युद्ध का आरंभ 1821 ई०में हुआ। इस घटना का वर्णन इतिहास के उन महत्वपूर्ण घटनाओं में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 15 वी शताब्दी में यूनान ऑटोमन साम्राज्य का ही एक भाग था। कवियों और महान कलाकारों ने यूनान को यूरोपीय सभ्यता का पालना बताकर देश की प्रशंसा की और उन्होंने मुस्लिम साम्राज्य के खिलाफ यूनान के संघर्ष के लिए जनमत भी इकट्ठा किया। 1824ई०में एक लॉर्ड बायरन नाम के अंग्रेज कवि जिन्होंने धन इकट्ठा किया, यहां तक कि पूरे बल और साहस के साथ युद्ध लड़ने के लिए भी तैयार हो गए, और युद्ध भी लड़ा परंतु अंत में तेज बुखार के कारण उनकी मृत्यु हो गई। अंत में आखिरकार 1832 ई०कि कुस्तुनतुनिया की संधि ने यूनान को एक स्वतंत्र राष्ट्र बना दिया।

(घ) फ्रैंकफर्ट संसद :

1. 1848 ई०में जब यूरोप में एक क्रांति की लहर उठी तो जर्मन इलाकों में भी बड़ी संख्या में राजनीतिक संगठनों ने फ्रैंकफर्ट शहर में मिलकर एक सर्व-जर्मन नेशनल असेंबली के पक्ष में मतदान करने का फैसला किया।
2. 18 मई 1848 को 831 निर्वाचित प्रतिनिधियों ने सजे-धजे जुलूस में जाकर फ्रैंकफर्ट संसद में अपना स्थान ग्रहण किया। यह संसद सेंट पॉल चर्च में आयोजित हुई थी।
3. उन्होंने एक जर्मन राष्ट्र के लिए संविधान का प्रारूप तैयार किया और राजा फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ के सामने ताज पहनने की पेशकश रखी।
4. फ्रेडरिक ने ऑस्ट्रिया के डर के कारण यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया।
5. अंत में सेना को बुलाया गया और असेंबली भंग हो गई।

इस प्रकार जर्मनी के एकीकरण का यह प्रयास असफल रहा।

© JCERT not to be republished

(ड़) राष्ट्रवादी संघर्षों में महिलाओं की भूमिका:

1. राष्ट्रवादी संघर्षों में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
2. राष्ट्रवादी आंदोलन में सभी यूरोपीय राज्यों जैसे फ्रांस ,इटली की महिलाओं ने सक्रिय भाग लिया।
3. महिलाओं ने अपने अनेक राजनीतिक संगठनों की स्थापना की।
4. इन्होंने खुद के समाचार पत्र शुरू किए।
5. नारी रूपकों का आविष्कार कलाकारों ने 19वीं सदी में किया।
6. महिलाओं ने अधिक मात्रा में प्रदर्शनों और रजनीतिक बैठको में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाई।

प्रश्न 2. फ्रांसीसी लोगों के बीच सामूहिक पहचान का भाव पैदा करने के लिए फ्रांसीसी क्रांतिकारियों ने क्या कदम उठाए?

उत्तर: फ्रांस की क्रांति 1789 ई०में शुरू हुई और वहां के लोगों ने राजतंत्र को समाप्त कर सत्ता की सारी बागडोर अपने हाथों में ले ली। अपनी एकता और संगठन बनाए रखने के लिए उन्होंने निम्नलिखित कदम उठाए:

(1) पितृभूमि और नागरिक जैसी विचारों ने उन्हें एक संयुक्त समुदाय बनाने पर बल दिया।

(2) पहले के राज्य ध्वज को हटाकर एक नया फ्रांसीसी झंडा चुना गया।

(3) राष्ट्र के नाम पर नई स्तुतियाँ रची गई, शपथ ली गई और शहीदों का गुणगान हुआ।

(4) अन्य भाषाओं की जगह लोगों को फ्रेंच भाषा बोलने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

(5) मापतौल की एक समान व्यवस्था लागू की गई।

प्रश्न 3. मारीआन और जर्मेनिया कौन थे? जिस तरह उन्हें चित्रित किया गया उसका क्या महत्व था?

उत्तर: फ्रांसीसी क्रांति के दौरान कुछ कलाकारों ने नारी रूपकों का प्रयोग अनेक प्रकार से अपने विचारों (स्वतंत्रता, मुक्ति, ईर्ष्या, लालच, एकता आदि) को प्रकट करने के लिए किया। फ्रांस में राष्ट्र के प्रतीक के रूप में लोकप्रिय नाम मारीआन दिया गया। उसे लाल टोपी, तिरंगा और कलगी के साथ दिखाया गया और उसकी प्रतिमा सार्वजनिक चौराहों पर लगाई गई ताकि लोगों को एकता के राष्ट्रीय प्रतीक की याद आती रहे।

इसी तरह जर्मेनिया भी जर्मन राष्ट्र का प्रतीक थी। उसके मुकुट को बलूत के वृक्ष के पत्तों से सजाया गया था, क्योंकि बलूत जर्मनी में वीरता का प्रतीक माना जाता है।

प्रश्न 4. जर्मन एकीकरण की प्रक्रिया का संक्षेप में वर्णन करे।

उत्तर:

(1) पहली अवस्था — 18 वीं शताब्दी में जर्मनी अनेक राज्यों में बंटा हुआ था, जिसके कारण उसका आर्थिक विकास बहुत ही धीमा था। 1815 ईसवी में जर्मनी के राज्यों को ऑस्ट्रिया के साथ मिलाकर एक जर्मन महासंघ की स्थापना की कोशिश की गई लेकिन यह कोशिश नाकाम रही।

© JCERT not to be republished

(2) दूसरी अवस्था — बिस्मार्क ने अपनी रक्त और लौह की नीति द्वारा जर्मनी के एकीकरण के काम को पूरा किया।

(3) तीसरी अवस्था — 1866 ईस्वी में जर्मनी का आस्ट्रिया के साथ युद्ध हुआ जिसमें जर्मनी की जीत हुई और उसके साथ अनेक प्रदेश जैसे: हैनोवर, होल्सटीन, लक्समवर्ग, कैसल और फ्रैंकफर्ट आदि आ मिले। इससे जर्मनी के एकीकरण का काम काफी आसान हो गया।

(4) चौथी अवस्था — 1870 ईस्वी में फ्रांस को हराने के बाद जर्मनी ने उससे आल्सेस और लॉरेन के महत्वपूर्ण प्रदेश छीन लिए। इससे प्रभावित होकर बाकी बचे हुए प्रदेश भी जर्मन महासंघ में शामिल हो गए। इस प्रकार बिस्मार्क के प्रयत्नों से 1870 ईसवी में जर्मनी के एकीकरण का लक्ष्य पूरा हुआ।

प्रश्न 5. अपने शासनकाल वाले क्षेत्रों में शासन व्यवस्था को ज्यादा कुशल बनाने के लिए नेपोलियन ने क्या बदलाव किए?

उत्तर: नेपोलियन द्वारा किए गए प्रमुख प्रशासनिक सुधारों में निम्नलिखित विशेषकर उल्लेखनीय है—

1. जन्म पर आधारित विशेषाधिकार को समाप्त किया गया और समानता के कानून को लागू किया गया।
2. यातायात और संचार व्यवस्था में सुधार किया गया।
3. सभी किसानों, मजदूरों और कारीगरों को अपने क्षेत्रों में बिना कोई काम रोक टोक के काम करने की स्वतंत्रता प्रदान की गई।

चर्चा करें

प्रश्न1. उदारवादियों की 1848 की क्रांति का क्या अर्थ लगाया जाता है? उदारवादियों ने किन राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विचारों को बढ़ावा दिया?

उत्तर: 1848 में जब यूरोप के किसान-मजदूर गरीबी, बेरोजगारी और भुखमरी से ग्रस्त होकर विद्रोह पर उतर आए थे। तब वहां के उदारवादी मध्य वर्गों ने राष्ट्रीय एकीकरण के लिए बढ़ती जन असंतोष का फायदा उठाते हुए संविधानवाद की मांग को उठाया। जिसमें कुछ सिद्धांत थे महिलाओं को राजनीतिक अधिकार प्रदान करना, राष्ट्र-राज्य संविधान, प्रेस की स्वतंत्रता और संगठन बनाने की आजादी।

प्रश्न 2. यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास में संस्कृति के योगदान को दर्शाने के लिए तीन उदाहरण दें।

उत्तर: यूरोप में राष्ट्रवाद के विकास में संस्कृति ने महत्वपूर्ण योगदान दिया, इस बात के निम्नलिखित उदाहरण है:-

1. लोक-संस्कृति: जर्मन दार्शनिक योहना गॉटफ्रीड हरडर का यह मानना था कि एक सच्ची जर्मन संस्कृति उसकी समान जनता में शामिल थी। एक राष्ट्र की सच्ची और अच्छी आत्मा लोकनृत्य , लोक काव्य और लोकगीतों में विद्यमान होती है। इसलिए राष्ट्र निर्माण परियोजना के लिए लोक संस्कृति के इन स्वरूपों को एकत्र और अंकित करना आवश्यक था।
2. भाषा: रूस के अधिकार के बाद सभी स्कूलों में बलपूर्वक पोलिश भाषा के स्थान पर रूसी भाषा को लागू किया गया। पोलिश भाषा रूसी प्रभुत्व के विरुद्ध संघर्ष के रूप में देखी जाने लगी। पोलिश भाषा का उपयोग धार्मिक शिक्षा तथा चर्च के आयोजनों में हुआ। इस तरह राष्ट्रीय भावनाओं के विकास में भाषा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

© JCERT not to be republished

3. संगीत: पोलैंड एक स्वतंत्र भू-क्षेत्र नहीं था लेकिन फिर भी भाषा और संगीत के बल पर राष्ट्रीय भावना को उत्पन्न किया गया। जिसके फलस्वरूप कैरोल कुर्पिस्की नामक एक नागरिक ने पोलीस राष्ट्र संघर्ष का अपने ऑपेरा और संगीत से गुणगान किया और पोलेनेस व माजुरका जैसे लोकनृत्यों को राष्ट्रीय प्रतीकों में परिवर्तन किया।

प्रश्न 3. किन्हीं दो देशों पर ध्यान केंद्रित करते हुए बताएं कि 19वीं सदी में राष्ट्र किस प्रकार विकसित हुआ।

उत्तर: 19वीं शताब्दी में यूरोप के अनेक देशों में राष्ट्रीयता की भावनाएं पनपने लगी और देखते ही देखते वहां अनेक राष्ट्रों का निर्माण हुआ। ऐसे दो देश जहां राष्ट्रीयता का विकास हुआ है इंग्लैंड और पोलैंड:

इंग्लैंड: इंग्लैंड में एक जातीय समूह अंग्रेजों ने ब्रितानी राष्ट्र का निर्माण करने के लिए अन्य समूहों पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। जिसके लिए उन्होंने अपनी आंग्ल संस्कृति, प्रतीक चिन्हों, राष्ट्रीय गान आदि का बहुत प्रचार प्रसार किया।

पोलैंड: वियना की कांग्रेस द्वारा पोलैंड का बहुत बड़ा भाग रूस को दिए जाने पर पोलैंड के लोगों के दिलों में अपने देश के प्रति राष्ट्रीयता की भावना जगने लगी। जिसके कारण 1848 ई० पोलैंड में वारसा के स्थान पर इस के खिलाफ क्रांति आरंभ हुई। विद्रोहियों को यह आशा थी कि उन्हें पश्चिमी यूरोपीय देशों की की सहायता प्राप्त होगी। परंतु रूस से दुश्मनी लेने को कोई तैयार नहीं था। जिसके कारण रूसी सेना ने विद्रोहियों को बड़ी सरलता से दबा दिया।

प्रश्न 4. ब्रिटेन में राष्ट्रवाद का इतिहास शेष यूरोप की तुलना में किस प्रकार भिन्न था?

उत्तर: इस बात में कोई संदेह नहीं की ब्रिटेन में राष्ट्रवाद के विकास का इतिहास बाकी यूरोप से काफी भिन्न था। ब्रिटेन में राष्ट्रीयता का आंदोलन किसी भी राजनीतिक उथल-पुथल या क्रांतियों से जुड़ा हुआ नहीं था बल्कि यह एक लंबी चलने वाली प्रक्रिया थी। जिसमें ब्रिटेन के संसद में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इंग्लैंड को एक राष्ट्र राज्य बनाने के लिए उठाए गए कुछ महत्वपूर्ण कदम:

1. 1688 ईसवी में संसद ने राजा से सत्ता अपने हाथों में ले ली।
2. 1707 ईस्वी में इंग्लैंड और स्कॉटलैंड के मध्य होने वाला 'एक्ट ऑफ यूनियन' समझौता।
3. 1801 ईस्वी में ब्रिटेन और आयरलैंड मिलकर यूनाइटेड किंगडम में बदल गए। जिससे कि इंग्लैंड और भी शक्तिशाली हो गया।

प्रश्न 5. बाल्कन प्रदेशों में राष्ट्रवादी तनाव क्यों पनपा?

उत्तर: काला सागर और एड्रियाटिक सागर के मध्य स्थित आधुनिक रोमानिया, बुल्गारिया, अल्बेनिया, यूनान, मेसिडोनिया, बोस्निया-हर्जेगोविना, सर्बिया आदि के राज्य बाल्कन राज्यों के नाम से जाने जाते थे। इन प्रदेशों में राष्ट्रीय तनाव 1875 के पश्चात् पैदा हुए। जिसके कारण निम्नलिखित है:

1. बाल्कन यूरोप में राष्ट्रवादी तनाव का मुख्य स्त्रोत था क्योंकि वहां पर विभिन्न जातियों के लोग रहते थे। जिनमें प्रायः टकराव होते रहते थे।
2. फ्रांस की क्रांति और नेपोलियन की युद्धों ने बाल्कन राज्यों के लोगों में राष्ट्रवाद की भावना को बढ़ावा दिया

© JCERT not to be republished

जिसके कारण वे लोग भी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने लगे।

3. बाल्कन के लोगों ने अपने इतिहास से यह सिद्ध किया कि वह पहले आजाद थे और बाहरी ताकतों ने उनको अपना गुलाम बनाया है। यह जानकर वहां के लोगों में आजादी के प्रति खोया हुआ मनोबल फिर से जाग उठा।

4. बाल्कन मे यूरोप के देश अपने प्रभाव को बढ़ाना चाहते थे। जिसके कारण वहां की समस्या और भी उलझनपूर्ण हो गई थी।

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न:-

1. विश्व में सर्वप्रथम राष्ट्रवाद की उत्पत्ति कहाँ हुई ?

   a. जर्मनी b. इटली

   c. फ्रांस d. जापान

2. "मैं ही राज हूं" किसका कथन है ?

   a. नेपोलियन b. बिस्मार्क

   c. लुई 14 d. लुई 16

3. प्रथम विश्व युद्ध का मूल केंद्र कौन सा था?

   a. जर्मनी b. जापान

   c. बाल्कन प्रदेश d.बाल्टीक क्षेत्र

4. यंग इटली का संस्थापक कौन था?

   a. मेजिनी b. मेटरनिख

   c. नेपोलियन d. बिस्मार्क

5. "जब फ्रांस छींखता है तो सारे यूरोप को सर्दी जुकाम हो जाता है"किसका कथन है?

   a. लुई—फिलिप b. लुई—14

   c. लुई—16 d. मेटरनिख

लघु उत्तरीय प्रश्न:-

1.राष्ट्रवाद

2.नेपोलियन

3.रक्त और लौह की नीति

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :-

1.1815 ई० के बाद यूरोप की राजनीति में कैसे बदलाव आया?

2. इटली के एकीकरण में उसके नायकों के योगदान का संक्षिप्त विवरण लिखें?

© JCERT not to be republished